# ❍ 04 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

## ⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखी ?*

➢➢ *सदैव कंबाइंड स्वरुप का अनुभव किया ?*

➢➢ *आत्माओ को सहयोग व प्राप्ति का अनुभव करवाया ?*

➢➢ *अव्यक्त स्थिति का अनुभव किया ?*

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जैसे अनेक जन्म अपने देह के स्वरूप की स्मृति नेचुरल रही है वैसे ही अपने असली स्वरूप की स्मृति का अनुभव थोड़ा समय भी नहीं करेंगे क्या?* यह पहला पार्ट कम्पलीट करो तब अपनी आत्म-अभिमानी स्थिति द्वारा सर्व आत्माओं को साक्षात्कार कराने के निमित्त बनेंगे।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

---

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं सर्व प्रप्तियों से भरपूर आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा अपने को सर्व प्राप्तियों से भरपूर अनुभव करते हो? कभी खाली तो नहीं हो जाते? क्योंकि बाप ने इतनी प्राप्तियां कराई हैं, अगर सर्व प्राप्ति अपने में जमा करो तो कभी भी खाली नहीं हो सकते। इस जन्म की तो बात ही नहीं है लेकिन अनेक जन्म भी यहां की भरपूरता साथ रहेगी। तो जब इतना दिया है जो भविष्य में भी चलना है, तो अभी खाली कैसे होंगे? *अगर बुद्धि खाली रही तो हलचल रहेगी। कोई भी चीज अगर फुल भरी नहीं होती तो उसमें हलचल होती है। तो भरपूर होने की निशानी है कि माया को आने की मार्जिन नहीं है। माया ही हिलाती है।*

〰✧ तो माया आती है या नहीं? *संकल्प में भी आती है, माया के राज्य में तो आधाकल्प अनुभव किया और अभी अपने राज्य में जा रहे हो। जब मायाजीत बनेंगे तब फिर अपना राज्य आयेगा और मायाजीत बनने का सहज साधन - सदा प्राप्तियों से भरपूर रहो। कोई एक भी प्राप्ति से वंचित नहीं रहो। सर्व प्राप्ति हो।*

〰✧ ऐसे नहीं - यह तो है, एक बात नहीं तो कोई हर्जा नहीं। अगर जरा भी कमी होगी तो माया छोड़ेगी नहीं, उसी जगह से हिलायेगी। तो माया को आने की मार्जिन ही न हो। आ गई, फिर भगाओ तो उसमें टाइम जाता है। तो मायाजीत बने हो? यह नहीं सोचो- 2 वर्ष या 3 वर्ष में हो जायेंगे। *ब्राह्मणों के

लिए स्लोगन है - 'अब नहीं तो कभी नहीं'। अब समय की रफ्तार के प्रमाण कोई भी समय कुछ भी हो सकता है। इसलिए तीव्र पुरुषार्थी बनो।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अभी-अभी अशरीरी हुए या युद्ध में, मेहनत करते-करते टाइम पूरा हो गया?* सेकण्ड में बन सकते हो! बहुत काम है फिर भी बन सकते हो? मुश्किल नहीं है? यू.एन. में बहुत भाग दौड कर रही हो और अशरीरी बनने की कोशिश करो, होगा?

〰✧ अगर यह अभ्यास समय प्रति समय करेंगे तो ऐसे ही नेचुरल हो जायेगा जैसे शरीर भान में आना, मेहनत करते हो क्या? मैं फलानी हूँ यह मेहनत करते हो? नेचुरल है। तो यह भी नेचुरल हो जायेगा। *जब चाहो अशरीरी बनो, जब चाहो शरीर में आओ।*

〰✧ अच्छा काम है आओ इस शरीर का आधार लो लेकिन आधार लेने वाली मैं आत्मा हूँ वह नहीं भूले। करने वाली नहीं हूँ, कराने वाली हूँ जैसे दूसरों से काम कराते हो ना। उस समय अपने को अलग समझते हो ना! वैसे *शरीर से काम कराते हुए भी कराने वाली मैं आत्मा अलग हूँ यह प्रैक्टिस करो तो कभी भी बॉडी कान्सेस की बातों में नीच-ऊपर नहीं होंगे।* समझा।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *अभी यह साकार से अव्यक्त रूप का पार्ट क्यों हुआ? सबको अव्यक्त स्थिति में स्थित कराने। क्योंकि अब तक उस स्टेज तक नहीं पहुँचे हैं। अभी अन्तिम पुरुषार्थ यह रह गया है। इसी से ही साक्षात्कार होंगे।* साकार स्वरूप के नशे की प्वाइन्ट्स तो बहुत हैं कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ और मैं शक्ति हूँ। इस स्मृति से तो आपको नशे और खुशी का अनुभव होगा। लेकिन जब तक इस अव्यक्त स्वरूप में, लाइट के कार्ब में स्वयं को अनुभव न किया है, तब तक औरों को आपका साक्षात्कार नहीं हो सकेगा। *क्योंकि जो दैवी स्वरूप का साक्षात्कार भक्तों को होगा वह लाइट रूप की कार्ब में चलते-फिरते रहने से ही होगा।* साक्षात्कार भी लाइट के बिना नहीं होता है। स्वयं जब लाइट रूप में स्थित होंगे, आपके लाइट रूप के प्रभाव से ही उनको साक्षात्कार होगा। *जैसे शास्त्रों में दिखाते हैं कि कंस ने कुमारी को मारा तो वह उड़ गई, साक्षात् रूपधारी हो गई और फिर आकाशवाणी की। वैसे ही आप लोगों का साक्षात्कार होगा, तो ऐसा अनुभव होगा कि मानो यह देवी द्वारा आकाशवाणी हो रही है।* वह सुनने को इच्छुक होंगे कि यह देवी या शक्ति मेरे प्रति क्या आकाशवाणी करती है। *आप में अब यह नवीनता दिखाई दे। साधारण बोल नज़र न आयें, ऊपर से आकाशवाणी हो रही है, बस ऐसा अनुभव हो।* इसलिए कहा कि अब ज्वालामुखी बनने का समय है।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
( आज की मुरली के सार पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :-सपूत बन सबूत देना"*

➳ _ ➳ ईश्वर शिक्षक के जीवन में आने से दिव्य गुणों की सुगन्ध का आनंद लेते हुऐ मैं आत्मा सोचती हूं... *श्रीमत ना होने के कारण मैं आत्मा देह भान से चूर थी... विकारो की मूर्खता से भरी हुई... किसी भी तरह से बाबा का सपूत बच्चा नही बन सकती थी... प्यारे बाबा ने मुझे आसमान से निहार कर... और अपना सपूत बच्चा बना कर... माता पिता दोनो की पालना दे कर... कितना प्यारा और महान बना दिया हैं* ... यही प्यारी मीठी गुफ्तगू प्यारे बाबा को सुनाने मैं आत्मा... मीठे बाबा के कमरे मैं पंहुचती हूँ...

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ सपूत बनी आत्मा को बाप का असीम प्यार लुटाते हुए और बहुत प्रसन्न होते हुऐ कहा* :- "मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वर को बाप के रूप में पाने वाले, महान भाग्यशाली हो... *सपूत बनकर अपने इस महान भाग्ये के नशे में झूलते ही रहो... एक दिन भी ऐसा कोई कार्य ना करना जिससे... माता पिता के आशीर्वाद से वंचित होना पड़े* ... यह आशीर्वाद ही एक दिन सतयुग में नवाब पद दिलाएगी..."

➳ ➳ *मैं आत्मा मीठे बाबा से सतयगी सपत बन कहती हँ* :- "मीठे

मीठे बाबा मेरे... *मैं आत्मा आपसे मिलने से पहले कितनी गरीब थी... सदा खुशियों को तरसती दुसरो में खोजती थी... *आपने प्यारे बाबा मुझे अपना सपूत बच्चा बना कर... श्रीमत पर चलना सिखाकर... माता पिता का अलौकिक प्यार बरसा कर... मुझे प्यार के धन से भरपूर कर दिया* ... मैं आत्मा अब आपके प्यार में सतोगुणी बनकर... सतयुगी सपूत बन रही हूँ..."

❇ *प्यारे बाबा ने मुझ को अपने सारे आशीर्वाद, ज्ञान ख़ज़ाने देते हुए कहा* :-"मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... 21 जन्मो तक स्वर्ग का राज्य भाग्य पाओ... यही ज्ञान खजाने, श्रीमत पर कायम रहना, तुम्हारा सपूत बन माता पिता का प्यार लेना... तुम्हें विश्व का मालिक बनायेंगे... *परमधाम से तुम्हारा असली बाप तुम्हें सपूत बना कर प्यार के खजाने देने आया हैं* ... यह बात कभी भी मत भूलना... बाप का हाथ और साथ कभी नही छोड़ना..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाबा के असीम प्यार को पूरी तरह से खुद में समेटते हुए कहती हूँ* :-"मेरे प्यारे बाबा... आपने अपना बना कर मुझ आत्मा का जीवन प्यार से भर दिया... दिव्य गुणों, शक्तियों से सजा कर... देवताई रूप दिया, सपूत बनाया... माता पिता बन कर आशीर्वाद लुटाए... *मेरा दामन खुशियों से भर दिया... मैं आत्मा सम्पूर्ण सन्तुष्टता को प्राप्त कर रही हूँ* ... मुश्किल से बाबा आप मिले हो... अब मैं आत्मा आपके साथ ही रहूँगी..."

❇ *मीठे बाबा ने बहुत प्यार से, मुस्कुराते हुए कहा* :- "मेरे बच्चे... ईश्वर पिता, सारे ख़ज़ाने, दौलत, अपना भरपूर प्यार तुम बच्चों के लिए ही तो लाया है... *तुम्हें सपूत इसिलए ही तो बनाया हैं... की सारे ख़ज़ानों पर अपना अधिकार जमा लो* ... भगवान से सब कुछ प्राप्त कर... देवताओं की खूबसूरत दुनिया में सपूत, नवाब बन कर मुस्कुराओ... *सारे सुखों को अपनी बाँहों में समा लो* ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा मीठे बाबा के इस कदर उपकारों से अभिभूत होकर कहती हूँ* :- "मेरे प्यारे दुलारे बाबा... *मैं आत्मा परमात्मा का सपूत बच्चा बन... खुशी से झूम रही हूँ... स्वयं दुनिया का मालिक मेरा बाप हैं* ... बाबा की श्रीमत ने जीवन को खशहाल, सखी बनाया हैं... *श्रीमत पर चलना बाबा ने

सिखाकर जीवन का ढंग निराला ही कर दिया* ... मीठे बाबा से सपूत बन हर समय श्रीमत का पालन करने का वायदा कर... मैं आत्मा अपने साकारी तन मे वापिस आ जाती हूँ..."

---

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
( आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखना*"

➳ _ ➳ जैसे ही मैं अपने मन बुद्धि को एकाग्र कर, बाबा की याद में स्थिर करती हूँ ऐसा अनुभव होता है जैसे वतन में बैठे बापदादा मुझे सहज ही अपनी और खींच रहें हैं और देखते ही देखते अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर के साथ मैं आत्मा अपनी साकारी देह से बाहर आ जाती हूँ और अपनी लाइट माइट चारों और फैलाती हुई अपने फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो कर ऊपर की और उड़ने लगती हूँ। *बापदादा की लाइट माइट मुझ फ़रिश्ते को अपनी और खींचते हुए सेकेंड में मुझे साकारी दुनिया से दूर आकाश के पार, उससे भी परें फरिश्तो की एक अद्भुत सुंदर दुनिया में ले आती है*।

➳ _ ➳ सफेद प्रकाश की यह दुनिया जहाँ हर आत्मा अपने सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप को धारण कर फरिश्तो की इस अति सुंदर नगरी में विचरण करते हुए, इस दुनिया के दिव्य अलौकिक नज़ारों का आनन्द ले रही है। *अपने सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप में यहां उपस्थित वरिष्ठ दादियों, मम्मा, बाबा और वरिष्ठ भाई, बहनो को मैं फरिश्ता देख रहा हूँ। सामने अव्यक्त बापदादा अपनी अनन्त लाइट माइट चारों और फैलाते हुए विशेष रूप से शोभायेमान हो रहें हैं*। बाबा की नजर अब मुझ फ़रिश्ते के ऊपर है। बाबा अपनी बाहों को फैलाये मुझे अपने पास बुलाते हैं। मैं फ़रिश्ता अब बाबा के पास पहुंचता हूँ। बाबा अपनी बाहों में मुझे समा लेते हैं और अपने असीम स्नेह से मुझे भरपूर कर देते हैं।

➳ _ ➳ अपने पास बिठाकर अब बाबा मुस्कारते हुए मेरा हाथ अपने हाथ मे लेते हैं और अपनी सर्वशक्तियाँ मुझ में समाहित करने लगते हैं। *मैं स्पष्ट अनुभव कर रहा हूँ एक तेज करंट के रूप में बाबा की सर्वशक्तियाँ मेरे अंदर समाहित हो रही हैं। एक असीम ऊर्जा का संचार मेरे भीतर हो रहा है और मैं स्वयं को बहुत ही शक्तिशाली अनुभव कर रहा हूँ*। अपनी समस्त शक्तियों से मुझे शक्तिशाली बना कर अब बाबा अपने हाथ मे एक बहुत सुंदर गिफ्ट ले कर मेरे हाथ पर रख देते हैं और मुझ से कहते हैं:- *"मेरे बच्चे, यह शुभभावना, शुभकामना की गिफ्ट है जिसे आपको अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को देना है"*

➳ _ ➳ इस अति सुंदर अनूठे गिफ्ट का बॉक्स मेरे हाथ मे देकर बाबा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख देते हैं। *शुभभावना, शुभकामना की गिफ्ट का स्टॉक सदा भरपूर रहे इसके लिए बाबा अपने वरदानी हस्तों को ऊपर उठाकर सर्व खजानों को मुझ पर लुटाते हुए अपने सर्वगुणों, सर्वशक्तियों और सर्वखजानो से मुझे सम्पन्न कर देते हैं*। मैं देख रहा हूँ बापदादा के साथ - साथ वहां उपस्थित एडवांस पार्टी की आत्मायें, मम्मा, वरिष्ठ दादियां और मेरे सभी वरिष्ठ भाई बहन भी अपनी समस्त ब्लेसिंग की गिफ्ट मुझे दे रहें हैं। *उन सभी की दुआयों से मैं स्वयं में एक्स्ट्रा एनर्जी का अनुभव कर रहा हैं ये दुआएँ मेरे लिए लिफ्ट का काम कर रही हैं*।

➳ _ ➳ बापदादा से शुभभावना, शुभकामना के गोल्डन गिफ्ट का स्टॉक स्वयं में भर कर और अपने अलौकिक ब्राह्मण परिवार की दुआयें ले कर अब मैं फ़रिश्ता इस अलौकिक गिफ्ट को सबको देने के लिए वापिस साकारी दुनिया में आ जाता हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होकर अब मैं अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को यह शुभभावना, शुभकामना की गिफ्ट दे रही हूँ*। किसी के भी अवगुणों को ना देखते हुए केवल विशेषताओ और गुणों की ही लेन - देन मैं अब कर रही हूँ। *चाहे कोई कैसी भी भावना या कामना से मेरे पास आता है किंतु मैं अपने शुभभावना और शुभकामना के स्टॉक को भरपूर रख सबको शुभभावना से देखते हुए शुभभावना, शुभकामना की अलौकिक गिफ्ट ही सबको दे रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के वरदान पर आधारित... )

✺ *मैं ज्ञान को लाइट और माइट के रूप से समय पर कार्य में लगाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं आत्मा ज्ञानी हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

_____

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित... )

✺ *मैं आत्मा सदैव ज़ीरो बाप के साथ कम्बाइन्ड होकर रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव हीरो पार्ट बजाती हूँ ।*
✺ *मैं कम्बाइन्ड स्वरूपधारी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

_____

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
( अव्यक्त मुरलियों पर आधारित... )

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा ने मैजारिटी बच्चों का वर्ष का पोतामेल देखा। क्या देखा होगा? मख्य एक कारण देखा। बापदादा ने देखा कि *'मिटाने और समाने' की

शक्ति कम है।* मिटाते भी हैं, उल्टा देखना, सुनना, सोचना, बीता हुआ भी मिटाते हैं लेकिन जैसे आप कहते हो ना कि एक है कान्सेस दूसरा है - सबकान्सेस। मिटाते हैं लेकिन मन की प्लेट कहो, स्लेट कहो, कागज कहो, कुछ भी कहो, पूरा नहीं मिटाते। क्यों नहीं मिटा सकते? उसका कारण है - समाने की शक्ति पावरफुल नहीं है। *समय अनुसार समा भी लेते लेकिन फिर समय पर निकल आता।* इसलिए जो चार शब्द बापदादा ने सुनाये, वह सदा नहीं चलते। अगर मानों *मन की प्लेट वा कागज पूरा साफ नहीं हुआ, पूरा नहीं मिटा तो उस पर अगर बदले में आप और अच्छा लिखने भी चाहो तो स्पष्ट होगा? * अर्थात् सर्व गुण, सर्व शक्तियां धारण करने चाहो तो सदा और फुल परसेन्ट में होगा? बिल्कुल *क्लीन भी हो, क्लीयर भी हो तब यह शक्तियां सहज कार्य में लगा सकते हो।*

➳ _ ➳ कारण यही है, मैजारिटी की स्लेट क्लीयर और क्लीन नहीं है। थोड़ा-थोड़ा भी *बीती बातें या बीती चलन, व्यर्थ बातें वा व्यर्थ चाल-चलन सूक्ष्म रूप में समाई रहती हैं* तो फिर समय पर साकार रूप में आ जाती हैं। तो समय अनुसार पहले चेक करो, *अपने को चेक करना दूसरे को चेक करने नहीं लग जाना* क्योंकि दूसरे को चेक करना सहज लगता है, अपने को चेक करना मुश्किल लगता है। तो चेक करना कि हमारे मन की प्लेट व्यर्थ से और बीती से बिल्कुल साफ है? *सबसे सूक्ष्म रूप है - वायब्रेशन के रूप में* रह जाता है। फरिश्ता अर्थात् बिल्कुल क्लीन और क्लीयर। *समाने की शक्ति से निगेटिव को भी पाजिटिव रूप में परिवर्तन कर समाओ।* निगेटिव ही नहीं समा दो, पाजिटिव में चेंज करके समाओ तब नई सदी में नवीनता आयेगी।

✺ *ड्रिल :- "मन की स्लेट को क्लीन और क्लीयर रखना"*

➳ _ ➳ मैं सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा अपने प्यारे बापदादा की यादो में खोई हुई हूँ... मेरे सामने बापदादा आकर खडे है... ब्रह्माबाबा के मस्तक में चमक रहे है महाज्योति शिवबाबा... *बापदादा को देखते ही उनमें खो गई... वाह बाबा वाह... आप कितने मधुर हो...* जैसे भक्ति में गायन है वैसे ही मधुर मधुर महसूस हो रहे है... बिलकुल वही गीत याद आ रहा है... अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधरं हसितं मधरम... हृदयं मधरं गमनं मधरं मधराधिपतेरखिलं मधरम...

*बापदादा मुस्कुराते हुए एक किताब देते है* मेरे हाथ में और कहते है... बच्चे:- ये रहा *आपका पूरे वर्ष का पोतामेल...* बापदादा ने हर एक शक्ति के मार्क्स लिखे है...

➳ _ ➳ मुझे ये देखकर बहुत खुशी हुई की *एक वर्ष में मैने असीम ऊंचाइयों को छुआ है...* दिनों दिन मेरी शक्ति बढती ही गई है... मैं आत्मा निरंतर चढती कला में जा रही हूँ... *लेकिन सर्व गुण और शक्तियां फुल परसेन्ट में नहीं है...* फिर मेरा ध्यान उस पर गया जहाँ पर मेरे मन की बातें साफ साफ लिखी है... मैंने देखा की अभी भी वो पुरानी बातें जो मैं समझती थी की मैं बिलकुल भूल चूकी हूँ वो भी लिखी है... मैं सोचने लगी की यह तो मैंने मिटा दिया था यह कहाँ से आया ? तो बापदादा ने कहा की आपने पूरा नहीं मिटाया... इसलिए अभी भी *मन की स्लेट क्लीन और क्लीयर नहीं... कान्सेस में तो मिटा दिया लेकिन सबकान्सेस में तो दिखाई दे रहा* है... मैं बापदादा से पूछती हूँ इसका कारण क्या है ? और निवारण क्या है ?

➳ _ ➳ बापदादा ने कहा की मन की स्लेट पूरी क्लीन नहीं हुई *क्योंकि समाने की शक्ति पावरफुल नहीं है...* समय अनुसार समा भी लेते लेकिन फिर समय पर निकल आता... इसलिए सर्व गुण और शक्तियों को फुल परसेन्ट में धारण करने की कितनी भी कोशिश करो लेकिन होती नही है... और सहज कार्य में भी नहीं लगा पाते हो... इसलिए मन की स्लेट बिल्कुल क्लीयर होनी चाहिए... बापदादा को सुनते ही मैं तपस्वी ब्राह्मण आत्मा *स्वयं को चेक करने में लग जाती* हूँ... जैसे ही मैंने *स्वदर्शनचक्र फिराना शुरू किया तो सारी समस्याएं और समस्याओं का निवारण समझ आने* लगा... मैंने इस बात को साफ-साफ देखा कि किस तरह व्यर्थ और बीती चाल चलना सूक्ष्म से साकार रूप लेती जा रही थी...

➳ _ ➳ मेरे देखने में स्वयं की भूल आते ही *मुझे पश्चाताप हुआ की किस तरह माया मुझे अपनी जाल मे फंसा रही थी...* किस तरह परदर्शन और परचिंतन में फंसा रही थी... और अपने अंश को वंश किए जा रही थी... अगर इसको मैंने *पहले ही संपूर्ण रूप से समा लिया होता तो माया की ताकत नहीं थी जो मझे हरा सके...* यह जानने के बाद अब मझे माया के भिन्न भिन्न

सूक्ष्म रूप भी दिखाई देने लगे है... शुक्रिया बाबा आपका पद्मापद्म गुणा शुक्रिया... आप मेरे सच्चे सतगुरू हो... जो हमेशा सच्ची राह दिखाते हो... न जाने इससे पहले भी कई बार आपने मेरी रक्षा कि है और विघ्नों से बचाया है... बापदादा ने बिल्कुल *सूक्ष्म रूप में भी व्यर्थ* दिखाया की किस तरह वो *वायब्रेशन के रूप में* रह गया है...

➳ _ ➳ अब *स्वदर्शन करते ही मुझ आत्मा के पुरुषार्थ की गति एकदम तीव्र हो गई है...* पुरुषार्थ की स्पीड सतोप्रधान हो गई है... *बापदादा ने अपना वरदानी हाथ मेरे मस्तक पर रखा* और मेरे मन में जो भी सूक्ष्म में व्यर्थ था वो अपने हाथो से खींच लिया... और साथ ही साथ *लाल रंग की शक्तियों की किरणों से भी भरपूर कर दिया... समाने की शक्ति को पूरी तरह से भर दिया...* अब तो मुझे बिल्कुल हल्कापन महसूस हो रहा है... एकदम खुशी की अनुभूति हो रही है... इसके कारण *मन एकदम क्लीन और क्लियर हो गया* है... ये हल्कापन मुझे *फरिश्तेपन की और* ले जा रहा है... अब मैं सर्व शक्तियों से संपन्न फरिश्ता हूँ... अब मेरे सामने जो भी *निगेटिव आ रहा है सब समा कर पाजिटिव में चेंज* करता जा रहा हूँ... और बापदादा भी यह नवीनता देखकर बहुत खुश हो रहे हैं... शुक्रिया बाबा... शुक्रिया...

---

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔

---